माननीय अध्यक्ष का प्रारंभिक अभिभाषण

मानसून सत्र, 2026

माननीय सदस्यगण,

आप सभी का मानसून सत्र, 2026 में हार्दिक स्वागत एवं जोहार।

आज हम छठी झारखण्ड विधान सभा के इस षष्ठम मॉनसून सत्र के लिए पुनः इस लोकतांत्रिक सदन में एकत्र हुए हैं। दिनांक 6 अगस्त से 12 अगस्त, 2026 तक आयोजित होने वाले इस छह दिवसीय सत्र से राज्य की जनता को अनेक अपेक्षाएँ हैं। मुझे विश्वास है कि यह सत्र लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप सार्थक, गरिमामय एवं जनोन्मुख सिद्ध होगा।

माननीय सदस्यगण, विधान सभा लोकतंत्र का सर्वोच्च जनमंच है। संविधान ने विधानमंडलों को तीन मूलभूत दायित्व सौंपे हैं—विधेयकों पर विचार कर कानून बनाना, राज्य की वित्तीय व्यवस्था एवं बजट की समीक्षा और अनुमोदन करना तथा कार्यपालिका को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाए रखना। इन दायित्वों का प्रभावी निर्वहन ही लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की सफलता का आधार है।

इन्हीं संवैधानिक दायित्वों को ध्यान में रखते हुए इस मानसून सत्र की कार्यसूची निर्धारित की गई है। इस सत्र में वित्तीय वर्ष 2026-27 का प्रथम अनुपूरक बजट सदन के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही, पाँच कार्य दिवस

प्रश्नकाल के लिए निर्धारित किए गए हैं, जिससे माननीय सदस्यों को जनहित के प्रश्नों के माध्यम से सरकार को उत्तरदायी बनाने का पर्याप्त अवसर प्राप्त होगा। प्रश्नकाल संसदीय लोकतंत्र का एक प्रभावी माध्यम है, जो शासन में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और जनविश्वास को सुदृढ़ करता है।

माननीय सदस्यगण, 12 अगस्त, 2026 को संसदीय परंपरा के अनुरूप गैर सरकारी सदस्य का कार्य निर्धारित है। यह माननीय सदस्यों को जनहित के विषयों पर अपने विचार, सुझाव और पहल सदन के समक्ष रखने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। मुझे विश्वास है कि इस अवसर का उपयोग सदन की गरिमा एवं संसदीय परंपराओं के अनुरूप किया जाएगा।

माननीय सदस्यगण, हाल ही में राज्य विधानसभाओं के कार्यनिष्पादन पर PRS द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार वर्ष 2025 में देश के 28 राज्यों तथा 3 केंद्रशासित प्रदेशों की विधानसभाओं की औसत बैठक अवधि 24 दिन रही। यह हमारे लिए संतोष का विषय है कि झारखण्ड विधान सभा गत वर्ष 30 दिनों तक संचालित हुई, जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है। यह उपलब्धि सदन के सभी माननीय सदस्यों की सक्रिय सहभागिता और संसदीय प्रतिबद्धता का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यदि हम इस मानसून सत्र की सभी बैठकों का संचालन पूरी गंभीरता, अनुशासन और रचनात्मकता के साथ करें, तो इस वर्ष भी हम इस उत्कृष्ट परंपरा को बनाए रखेंगे।

माननीय सदस्यगण, आज विश्व तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक चुनौतियाँ और विकास की नई आवश्यकताएँ शासन-व्यवस्था के समक्ष नए अवसर और नई जिम्मेदारियाँ लेकर आई हैं। ऐसे समय में हमारी यह जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि झारखंड के विकास, सामाजिक समरसता, कृषि, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा जनकल्याण से जुड़े विषयों पर गंभीर एवं सार्थक विचार-विमर्श हो।

हमारा संविधान हमें अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व भी सौंपता है। लोकतंत्र केवल बहुमत का शासन नहीं, बल्कि संवाद, सहिष्णुता और विचारों के सम्मान की संस्कृति है। सत्ता पक्ष और विपक्ष लोकतांत्रिक व्यवस्था के समान रूप से महत्त्वपूर्ण अंग हैं। मतभेद स्वाभाविक हैं, परंतु जनहित सदैव सर्वोपरि रहना चाहिए। स्वस्थ संवाद, तथ्यपूर्ण बहस और सकारात्मक सहयोग ही लोकतांत्रिक संस्थाओं की वास्तविक शक्ति हैं।

झारखंड की जनता ने हम सभी को विश्वास के साथ इस सदन में भेजा है। हमारे शब्द, हमारा आचरण और हमारे निर्णय उसी विश्वास की कसौटी पर परखे जाएँगे। आइए, हम सब मिलकर इस मॉनसून सत्र को अनुशासित, गरिमामय, परिणामोन्मुख और जनोन्मुख बनाएँ, ताकि यहाँ होने वाला प्रत्येक विचार-विमर्श राज्य के विकास, लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और जनता के विश्वास को और अधिक सुदृढ़ करे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं आप सभी का पुनः स्वागत करता हूँ तथा विश्वास व्यक्त करता हूँ कि यह मानसून सत्र सफल, सार्थक और जनकल्याणकारी सिद्ध होगा।

जोहार। धन्यवाद।